मूल असमीया पाठ	हिन्दी अनुवाद
सीताक दिबाक बुलिलंत विभीषणे। मारिवंत लाथि ताक दुर्ज्जन रावणे॥ रामत शरण आसि लैबा बिभीषणे॥ तांक अभिषेक रामे करिबा तेखने॥76	सीता को लौटाने हेतु बोला विभीषण। उसे लात मार देगा दुर्जन रावण॥ राम के शरण में आयेगा विभीषण। श्रीराम अभिषेक करेंगे उसी क्षण॥76
हैबा बिभीषण अभिनव लंकेश्वर। सागरत पंथ मागिबन्त रघुबर॥ निदिबा सागरे देखा रामक गर्ब्बत। देखि धनुसर रामे धरिबा क्रोधत॥77	विभीषण होगा अभिनव लंकेश्वर। सागर से लंका पथ मांगा रघुवर॥ श्रीराम को दर्शन नहीं देगा गर्वित। देख श्रीराम धनुष लेंगे हो क्रोधित॥77
भयत कंपिब आति सागरर हिया। रामक करिब स्तुति पाद्य अर्घ्य दिया॥ चलियोक दिलो पंथ बोलंत सागरे। नयाइबेक तल सेतु बान्धियो पाथरे॥78	भय से काँपेगा अति सागर का हिया। स्तुति की राम की पद्य और अर्घ्य दिया॥ चलिये, दे दिया है पथ बोला सागर। सेतु निर्माण करें न डूबेंगे पत्थर॥78
अदभुत कर्म्म करिबेक रघुबरे। पर्ब्बत आनिया सेतु बान्धिब बानरे॥ लक्ष्मण सुग्रीब बिभीषण समन्वित । ससैन्ये हैवंत गैया सिबेलात थित॥79	अद्‌भुत कर्म करेंगे श्रीरघुवर। पर्वत लाकर सेतु बांधेंगे वानर॥ लक्ष्मण,सुग्रीव विभीषण समन्वित। सैन्य सहित होंगे लंका में उपस्थित॥79
सेनागण गणिबाक प्रति राघवर। शुक सारणक पठाइबेक लंकेश्वर॥ बिभीषणे धरि दुइको रामत योगाइब। ताते रामे रावणक बार्त्ताक पठाइब॥80	राघव सेना की संख्या जानना चाहेगा। शुक-सारण से लंकेश्वर कह देगा॥ विभीषण दोनों को राम लाके देगा। श्रीराम का संदेश रावण को मिलेगा॥80
आचरिया कपट रावण बुद्धिहत। माया-शिर दिब निया सीतार हातत॥ देखि सीता सती माया-शिर राघवर। भूमित लुटिया देवी कान्दिब बिस्तर॥81	बुद्धिहत हो रावण कपट करेगा। राम का माया-शिर सीता के हाथों हाथ॥ सती राघव का माया-शिर देखकर। क्रंदन करेंगी भूमि पर लेटकर॥81
प्रभातते बेढ़िया लंकार चारिद्वार। दूत पठाइबंत रामे बालिर कुमार॥ भर्त्सिब अंगदे रावणक बारे बार। मारिबंत चारि गोटा बीर रावणर॥82	प्रातः काल ही लंका का घेर चारों द्वार। दूत भेजे देंगे राम बालि का कुमार॥ अंगद रावण की भर्त्सना ही करेगा। वह रावण के चार वीर मार देगा॥82

लाथि मारि भांगिबिन्त रावणर घर।
रामर पाशक आसिबंत कपिबर॥
रावणे युँजिब लैया कटक अपार।
बानरे करिब राक्षसक बुन्दामार॥83

लाट से तोड़ेगा वह रावण का घर।
राम के पास चल आयेगा कपीवर॥
रावण लड़ेगा सेना सहित अपार।
राक्षसों को नष्ट करते वीर वानर॥83

अंगदे जिनिब इंद्रजितक इंगिते।
अंतरीक्षे शर बरषिब इंद्रजिते॥
मायाबले पीड़िबेक बानर कटक।
नागपाशे बान्धिबेक राम लक्ष्मणक॥84

अंगद इंद्रजीत जीतेगा इंगित से।
इंद्रजीत छोड़ेगा शर अन्तरिक्ष से॥
मायाबल से पीड़ा होती है वानरों को।
नागपाश बांध लेगा राम-लक्ष्मण को॥84

गरुड़र आश्वासे गुचिब नागपाश।
देखि रावणक लागिबेक महात्रास॥
अनेक राक्षस सेनागण समन्विति।
सेनापतिगण पांचिबंत लंकापति॥85

गरुड़ के आश्वासन से छोड़ेगा पाश।
देखकर रावण को होगा महात्रास॥
अनेक राक्षस और सेना समूह से।
जाने को बोला लंकापति सेनापति से॥85

चारि सेनापति याइब यमर सदन।
धूम्राक्ष प्रहस्त बक्रदंत अकंपन॥
तेवे समदले आसि युँजिब रावण।
बानर कटक मारिबेक दशानन॥86

चार सेनापति जाएँ यम का सदन।
धूम्राक्ष ,प्रहस्त,वक्रदंत,अकंपन॥
समदल संग युद्ध करेगा रावण।
वानर समूह को मारेगा दशानन॥86

देखि रामचंद्रे हाते धरि धनुशर।
केशे समे किरीटि काटिब रावणर॥
यम येन राघवक देखिया साक्षात।
भंग दिया पलाइ गैया पशिब लंकात॥87

देख राम ने हाथ में धनुष उठाया।
केश के साथ रावण का मुकुट काटा॥
राघव को साक्षात मानो यम देखेगा।
कंपित हो भागकर लंका पहुँचेगा॥87

माहमर्म्मे जानुत थापिया दश माथ।
अपमान पाया कान्दिबंत लंकानाथ॥
श्रीहत हैबे मुख परिब बिबर्ण।
पठाइबे युँजिबाक जगाइ कुम्भकर्ण॥88

दर्द से दसों सिर घुटनों में रखेगा।
अपमान से लंका का नाथ रो पड़ेगा॥
श्रीहत होगा मुख और होगा विवर्ण।
नींद से जग युद्ध करेगा कुंभकर्ण॥88

घोर शरे रामे तार छेदिबंत शिर।
शोके रावणर हिया हैब दुइ छिर॥
तेवे चारि पुत्र मारि याइब यमघर।
रनत परिब आरो दुइ सहोदर॥89

शर से रामचन्द्र ने सर छेद किया।
शोक से टुकड़े हुए रावण का हिया॥
तब चार पुत्रों को भेजेंगे यमघर।
रण में प्राण देंगे और दो सहोदर॥89

अतिकाय कुमारक मारिब लक्ष्मण।
इंद्रजिते आसि पुनरपि दिब रण॥

अतिकाय कुमार को मारेंगे लक्ष्मण।
इंद्रजीत आकर फिर करेगा रण॥

राम लक्ष्मणक आदि यत सेनागण।
रावणर शरे सबे हैब अचेतन॥90

राम,लक्ष्मण आदि जीतने सेनागण।
रावण के शर से होंगे ये अचेतन॥90

जाम्बवन्त उपदेशे बीर हनुमंत।
औषध आनिया समस्तके जीयाइबंत॥
रावणक मने महा मिलिब शंकट।
चमकि रहिब दिया दुवारे कपाट॥91

जांबवंत को सुन हनुमान जायेंगे।
औषधि लाकर सबको वे जिलायेंगे॥
रावण का मन बड़ा ही होगा शंकित।
चकित बैठा होगा बंद कर कपाट॥91

बानर भालुकगणे महाहृष्ट हुइ।
दहिब सुवर्णपुरी लंका दिया जुइ॥
पाचे सात महाबीर मारिब बानरे।
मकराक्ष बीरक बधिब रघुबरे॥92

वानर और भालू हृष्टपुष्ट यूँ होंगे।
सुवर्णपुरी लंका का दहन कर देंगे॥
वानर सात महावीर मार डालेंगे।
मकरक्ष को रघुवीर बध करेंगे॥92

तेवे माया सीताक काटिब इंद्रजित।
शोकर जमके राम हैबंत मूर्च्छित॥
बिभीषणे बुजाइबंत कहिया संभेद।
लक्ष्मणे करिब रावणक स्कंध छेद॥93

तब माया सीता को काटेगा इंद्रजीत।
महाशोक से राम हो जायेंगे मूर्च्छित॥
विभीषण समझायेगा कह संभेद।
लक्ष्मण करेंगे रावण का स्कन्ध छेद॥93

पुत्रस्नेहे अनेक कान्दिब लंकानाथ।
शोके बिदारिब हिया येन बज्रपात॥
क्रोधत बेगत देखिबेक अंधकार।
सीताक काटिबे खेदि याइब दुराचार॥94

पुत्रस्नेह में बहुत रोता लंकानाथ।
शोक की पीड़ा से हृदय में बज्रपात॥
क्रोध वेग से वह देखेगा अंधकार।
सीता को काटने को जायेगा दुराचार॥94

देखि मंदोदरी तांक प्रबोधि आनिब।
असंख्य कटक युँजिबाक पठाइ दिब॥
गंधर्ब्बर अस्त्र रामे करिब प्रकाश।
क्षणेके करिब दुष्ट राक्षस बिनाश॥95

मंदोदरी प्रबोध दे वापस लायेगी।
असंख्य सेना युद्ध में भेज दी जायेगी॥
गंधर्व का अस्त्र राम करेंगे प्रकाश।
क्षणभर में राक्षस करेंगे विनाश॥95

समस्ते राक्षस संगे लैयो लंकापति।
बजाइब आटोपे साँजि युँजिबाक प्रति॥
तिनि सेनापति तार याइब यमघर।
राम रावणर घोर मिलिब समर॥ 96

समस्त राक्षस सहित लंका का पति।
सजेंगे धजेंगे सब यूँ युद्ध के प्रति॥
तीन सेनापति तो जायेंगे यमघर।
राम रावण का होगा जो महासमर॥96

रावणक शकतित परिब लक्ष्मण।
ताक कोले धरि रामे करिब क्रंदन॥
औषध आनिबे याइब बायुर कुमार।
तथापि मारिब कालनेमि निशाचर॥97

रावण की शक्ति से गिरता है लक्ष्मण।
गोद में लेकर राम करेंगे क्रंदन॥
औषध लाने जायेंगे वायु के कुमार।
फिर मारेंगे कालनेमि को निशाचर॥97

तिनि कोटि गंधर्ब्बक मारिब तहिते।	हनुमान तीन करोड़ गन्धर्व मारेंगे।
आनिब औषध बीरे पर्ब्बत सहिते॥	औषधि के साथ वीर पर्वत लायेंगे।
बिशल्यकरणी औषधर गंध पाइ।	विशल्यकरणी औषधि गंध पाकर
जीबंत लक्ष्मण जय आनंद बढ़ाइ॥98	लक्ष्मण जीयेंगे सबको हर्षित कर॥98
रावणक बधिते रामर हैब चित।	रावण बध हेतु राम का होगा चित्त।
आसिबेक देव-रथ मातलि सहित॥	आयेगा देवरथ से मातलि सहित॥
ताते चड़ि कौतुक युँजिब रघुनाथ।	वहाँ चढ़कर श्रीराम युद्ध करेंगे।
बारे बारे रावणर काटिबंत माथ॥99	बार-बार रावण के सर वे काटेंगे॥99
नमरिब तथापि रावण महाबीर।	पर नहीं मरेगा रावण महावीर।
ब्रह्म अस्त्र हानि पाचे छेदिबंत शिर॥	फिर ब्रह्मास्त्र से फिर छेद किया शिर॥
आकाशत देवगणे आनंद करिब।	आकाश में देवगण आनंदित होंगे।
जय जय ध्वनि दशोदिशक पूरिब॥100	दसों दिशाओं में जयगान से गूँजेंगे॥100